आपके पत्र

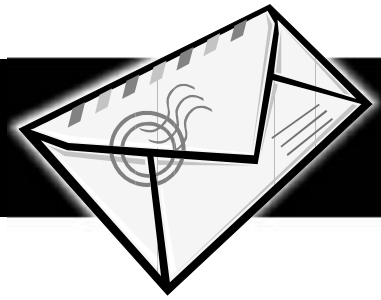

संपादक जी ,

मधुमेह वाणी पत्रिका में प्रकाशित "अण्डे का फण्डा" प्रचलित भ्रान्तियों का भण्डा फोड़ करने के लिये उपयुक्त सामाग्री है। वहीं शोध समाचार में "ड्रीम ट्रायल" प्रकाशित कर नयी नयी जानकारियाँ देकर मरीज़ (रोगी) ही नहीं डाक्टरों का ज्ञान बढ़ाने में पत्रिका को योगदान काबिले तारीफ़ है।

– डॉ. अशरफ अली (महोबा वाले)
जासा पारा सुल्तानपुर (उ.प्र.)

सम्पादक जी,

मधुमेह वाणी का पिछला अंक पढ़ा। डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी का राजनीतिक मुन्नाभाई मजेदार था। पहले तो सोचा कि इसका मधुमेह से क्या संबंध? परंतु आज राजनीति भी मधुमेह की तरह एक रोग ही तो हो गई है। मधुमेह में अंग–विच्छेद पढ़कर डर–सा लगा।

– बृजमोहन मालवीय, जबलपुर

संपादक महोदय,

मधुमेह वाणी जानकारी का खजाना है। नपुंसकता का लेख कई लोगों को उचित मार्गदर्शन देता है। यह सही में एक बड़ी समस्या है, पर मरीज़ अपनी बात किसी से कह नहीं पाता। शोध समाचार की बातें किसी दूसरी दुनियाँ की लगती हैं। इंसुलिन पम्प जैसी चीजें भारतीयों को उचित मूल्य पर कब तक मिल सकेंगी? मेरा सुझाव है कि मरीजों के अनुभवों को और जगह दें।

– संतोष कुमार पालीवाल, भोपाल
(इस बारे में कई पत्र बिना नाम के भी मिले हैं – संपादक)

संपादक महोदय,

अक्टूबर–नवम्बर अंक में क्षय रोग पर डॉ. लोकेन्द्र दवे का लेख बहुत ही काम का है। मैं स्वयं भुक्तभोगी हूँ। मुझे भी विश्वास ही नहीं हुआ कि मुझे टी. बी. हो गई। परंतु ठीक से उपचार से अब मैं पूर्ण रूप से ठीक हूँ। शुरू के तीन महीने मुझे इंसुलिन लेनी पड़ी थी, पर अब वापस गोलियों से शुगर कंट्रोल में है। सभी मधुमेही साथियों से कहना चाहूँगा कि यदि खाँसी लम्बे समय तक रहे और वज़न कम हो तो छाती का एक्स–रे अवश्य करवा लें।

– परवेज़ अहमद, भोपाल

संपादक जी,

हर अंक में मधुमेह वाणी का कलेवर निखरता जा रहा है। वैज्ञानिक जानकारी उच्च श्रेणी की है। व्यंग्य और चुटकुले तो सबसे पहले पढ़ने में आते हैं। उनसे पत्रिका की रोचकता बरकरार रहती है। ''आपके सवाल, विशेषज्ञ के जवाब'' स्तम्भ को मैं सबसे उपयोगी मानता हूँ। अक्सर हमारी जिज्ञासाओं के उत्तर यहीं मिल जाते हैं। इंसुलिन पर दी जानकारी उन कुछ लोगों के लिये ही उपयोगी होगी जो इंसुलिन ले रहे हैं।

– शिवप्रकाश अग्रवाल, इलाहबाद

संपादक जी,

आपकी पत्रिका बहुत काम की है सभी मधुमेही मरीजों के लिये। अण्डे पर जानकारी उपयोगी थी। मेरा निवेदन है कि भाषा बहुत क्लिष्ट न बनायें।

– रविन्द्र माथुर, जयपुर

संपादक महोदय,

मैं दावे से कह सकता हूँ कि मधुमेह वाणी से अच्छी, इस बीमारी के लिये पठनीय सामग्री नहीं मिल सकती। मैं पिछले दो साल से इसे पढ़ रहा हूँ। आपने मधुमेह के सभी पहलुओं को छुआ है। डॉक्टर साहब से इतनी जानकारी कभी नहीं मिल पाती। शोध समाचार और रसोई से बहुत पसंद आते हैं। रसोई से की विधियों को कई बार आज़माया है। उम्मीद है आप पत्रिका का यही स्तर बनाये रखेंगे।

– सुरेश कुमार दीक्षित, विदिशा

संपादक महोदय,

पहली बार आपकी पत्रिका पढ़ने का मौका मिला। आप बधाई के पात्र हैं जो हम मधुमेहियों के लिये इतनी अच्छी पत्रिका निकाल रहे हैं। क्या मुझे पत्रिका के पुराने सभी अंक भेजेंगे। क्या ऐसी कोई पत्रिका मराठी में निकलती है? मेरे पास मधुमेह पर मराठी में कविताएँ हैं।

– विष्णु वराह जोशी, पुणे